संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत् : 2079 वर्ष : 2023 (हिन्दी पाक्षिक) अंक : मार्च (द्वितीय)

सम्मान पद-प्रतिष्ठा का नहीं योग्यता का हो

अनुसूचित जाति के लोगों को धर्मांतरण करने पर आरक्षण नहीं

www.vskbihar.com | https;//www.facebook.com/vskbihar https;//twitter.com/vskbihar https;//kooapp.com/vskbihar

फणीश्वर नाथ रेणु का आंचलिक कथा संसार

-शुभ किरण

बिहार की धरती ने यूं तो हिन्दी साहित्य को एक से बढ़कर एक कवि, लेखक और उपन्यासकार दिए, परंतु जब बात ठेठ आंचलिक परिवेश में रची बुनी, मन के भीतरी कोर तक छू लेने वाली कहानियों की होती है तो सिर्फ एक ही नाम जुबां पर आता है। फणीश्वर नाथ रेणु। गांव की पृष्ठभूमि पर रचा गया उनका उपन्यास 'मैला आंचल' बुद्धिजीवियों और साहित्यप्रेमियों के लिए आज भी चर्चा और शोध का विषय है। एक ऐसा साहित्यकार जिसने ग्रामीण जीवन की सरसता, विवशता, राजनीतिक द्वंद्व और जातिगत विरोधाभासों को एक साथ पन्नों पर अपनी कलम से इस तरह उकेरा कि लगता है जैसे किसी कुशल फोटोग्राफर ने पन्नों पर शब्द नहीं, गांव की पूरी तस्वीर उतार दी है। उनकी रचनाओं की विशेषता ही यही है कि हम चाहे 'लाल पान की बेगम' पढ़ें, 'पंचलेट' या 'रसिकप्रिया', ऐसा लगता है मानो पढ़ते समय आंखों के सामने एक चलचित्र चल रहा है। किरदारों के साथ गांव और वहां के वातावरण का रंग भी हम पर चढ़ने लगता है। रेणु जी का यही आंचलिक स्पर्श उन्हें आंचलिक साहित्य का पुरोधा बना देता है।

हालांकि इससे पहले भी ग्रामीण परिवेश पर लिखने वाले कई लेखक हुए, परंतु रेणु जी ने जिस तरह अपने कथा-उपन्यासों में गांव को जीवंत किया, उसे नायकत्व प्रदान किया, उतना संभवतः कोई ही कर पाया होगा। प्रेमचंद के बाद गांव की माटी की सोंधी महक में ठेठ दुपहरी वाली पसीने की गंध को आप फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं में ही अनुभव कर सकते हैं। यह रेणु का कथा वैशिष्ट्य नहीं तो और क्या है कि उनकी मूल रचना 'मारे गए गुलफाम' के पात्र हीरामन गाड़ीवान और नाचनेवाली हीराबाई हिन्दी सिनेमा के रूपहले परदे पर कालजयी हो गए। इस कहानी पर बनने वाली फिल्म का नाम था- तीसरी कसम। राज कपूर और वहीदा रहमान की जोड़ी ने अपने अभिनय से रेणु के आंचलिक पुट को सिनेमाप्रेमियों के बीच इस तरह प्रतिस्थापित किया कि वह अमिट हो गया। हालांकि फिल्म बनाने वाले गीतकार शैलेन्द्र और अभिनेता राजकपूर अंत तक चाहते रहे कि फिल्म एक सुखांत संदेश के साथ खत्म हो, पर लेखक की कलम ने जो अनुभव किया था, उसे वैसा ही रहने दिया। फिल्म जब परदे पर आई तो दर्शकों को भी हीरामन और हीराबाई के अलगाव का 'द एण्ड' पसंद नहीं आया और फिल्म बुरी तरह फ्लाप हुई, मगर बाद में इसी अनूठे प्रयोग के कारण कई अवार्ड इसके नाम दर्ज हुए। हिन्दी सिनेमा की बहुमूल्य कालजयी कृतियों में से एक मानी जाने वाली इस फिल्म को हिट करने के लिए रेणु चाहते तो इसे सुखांत स्पर्श दे सकते थे, परंतु लेखक ने जिस वेदना को अपनी कलम से सजीव किया था, वह दर्द कैसे छिपा देते। उन्होंने अपनी रचनाधर्मिता का पालन किया और साहित्य और सिनेमा, के लिए एक नयी रवायत रच डाली कि जरूरी नहीं कि हर प्रेम का अंत सुख से भरा हो, विरह की वेदना में लिपटा अंत भी मार्मिक हो सकता है।

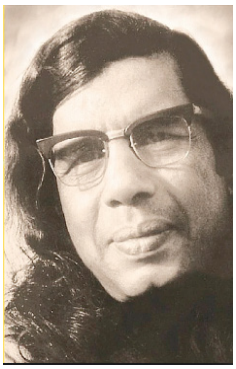

घुंघराले बालों वाले, आंखों पर ऐनक लगाए फणीश्वर जी के बारे में चंद शब्दों में लिखना असंभव है। वह तो अपने आप में संपूर्ण शोध का विषय हैं। बिहार के पूर्णिया जिला के औराही हिंगना गांव में 4 मार्च 1921 को उनका जन्म हुआ जो अब पूर्णिया जिला का हिस्सा है। अपने जीवन काल में उन्होंने किसानों का संघर्ष देखा, जातिगत वर्चस्व की लड़ाई देखी, अंग्रेजी सत्ता का शोषण देखा और राजनीति के दांव पेंचों में उलझी सीधी- सच्ची ग्रामीण जीवन की कसक देखी। यही कारण था कि उनकी कविता, कहानियों में गांव बार-बार आया। कई रूप में कई रंग लिए। कलम के इस जादूगर ने 'ठुमरी, अग्निखोर, आदिमरात्रि की महक' जैसे कथा संग्रह और 'परतीपरीकथा, दीर्घतपा और कितने चैराहे' जैसे उपन्यासों में गांव की बोली से लेकर, वहां के रहन-सहन, बात-विचार, उम्मीद-अवसाद और संघर्ष को जिस तरह रेखांकित किया, वह अदभुत है।

रेणु जी के व्यक्तिगत जीवन की भी बेमिसाल कहानी है। उनका प्रथम विवाह बालपन में ही हो गया था। पहली पत्नी से एक पुत्री हुई और वह पक्षाघात व मस्तिष्क की बीमारी से चल बसीं। बाद में माता-पिता के दबाव में दूसरा विवाह एक विधवा युवती पद्मा से हुआ जिनसे उन्हें तीन पुत्र और तीन पुत्रियां हुईं। इन दोनों विवाह में उन्हें दांपत्य सुख तो मिला, लेकिन उनकी बौद्धिक विचारधारा को समझा और सराहा लतिका ने जो पटना के अस्पताल में नर्स थीं और फणीश्वर जी की बीमारी में उनकी देखभाल करने के दौरान उनके सान्निध्य में आईं। माना जाता है कि लतिका से विवाह के बाद उनका साहित्यिक संसार पहचान में आया और विस्तृत हुआ। मजे की बात यह रही कि दोनों पत्नियों ने अपने पत्नी अधिकार से ज्यादा पत्नी कर्तव्य को महत्व दिया। जहां पद्मा ने बच्चों और गृहस्थी का पूरा जिम्मा अपने सिर ले लिया था, वहीं लतिका ने उनके साहित्यिक जीवन को समृद्ध करने में यथासंभव योगदान दिया। कहते हैं कि किसी पुरुष की कामयाबी में एक महिला का हाथ होता है। रेणु जी की सफलता में तो दो स्त्रियों का साझा योगदान रहा।

'मैला आंचल' के लिए पद्मश्री से सम्मानित रेणु का देहावसान 11 अप्रैल 1977 को हुआ। महज 56 साल की उम्र में उनका चले जाना साहित्य जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति रही, परंतु वह ऐसा नाम बनकर उभरे कि सदियों तक उन्हें उनकी रचनाओं के लिए याद किया जाएगा। हिन्दी ही नहीं, विश्व साहित्य में भी वह ऐसा ध्रुव तारा हैं जो अपने स्थान पर अडिग है और हमेशा रहेगा।

संवाद दर्शन

(हिन्दी पाक्षिक)

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

संवाददाता
विपुल कुमार सिंह

विज्ञापन
संजीव कुमार सिन्हा

प्रसार व्यवस्था
देवेन्द्र नारायण

प्रकाशक व मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
डी.पी. प्रिन्टर्स,अनूप लेन, पटना

पता
104-105, विश्व संवाद केन्द्र,
सूर्या अपार्टमेंट, फ्रेजर रोड, पटना।
पिन- 800 001
संपर्क- 0612-2216048
ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

अनुक्रमणिका

नाबालिग दलित लड़की को ब्लैकमेल कर रहा था मुस्लिम युवक 01

बिहार में होली के विविध रंग 02

और भी पढ़ें...

बोध कथा.....

संपादकीय .....

बिहार और स्वतंत्रता संग्राम 04

बजट 05

बिहार विरासत 07

कृषि 08

शब्द-सामर्थ्य 09

स्वास्थ्य 10

संवाद परिक्रमा (राष्ट्रीय) 11

संवाद परिक्रमा (प्रदेश).....13

फॉर्म - IV

संवाद दर्शन समाचार पत्र के बारे में स्वामित्व और अन्य विवरण के बारे में वक्तव्य

01. प्रकाशन का स्थान	:- पटना
02. प्रकाशन की अवधि	:- पाक्षिक
03. प्रकाशक का नाम	:- बिमल कुमार जैन
राष्ट्रीयता	:- भारतीय
पता	:- 104-105, सूर्या अपार्टमेंट, फ्रेजर रोड, पटना-01
04. मुद्रक का नाम	:- बिमल कुमार जैन
राष्ट्रीयता	:- भारतीय
पता	:- 104-105, सूर्या अपार्टमेंट, फ्रेजर रोड, पटना-01
05. संपादक का नाम	:- संजीव कुमार
राष्ट्रीयता	:- भारतीय
पता	:- 104-105, सूर्या अपार्टमेंट, फ्रेजर रोड, पटना-01
06. उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनके पास अखबार और साझेदार का शेयरधारक हैं	:- कोई नहीं

मैं बिमल कुमार जैन एतद द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे द्वारा दिये गये उपरोक्त विवरण मेरे ज्ञान में सही हैं।

दिनांक :- 15.03.2023

सम्मान पद-प्रतिष्ठा का नहीं, योग्यता का हो

लाल बहादुर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री थे, उनके पुत्र अनिल ने 12 वीं कक्षा पास करने के बाद दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज में प्रवेश के लिए आवेदन किया। अनिल ने आवेदन-पत्र में पिता का नाम एल. बी. शास्त्री और घर का पता-'10 जनपथ' लिखा था। सभी छात्रों के साथ उनका आवेदन पत्र भी इंटरव्यू के लिए गठित समिति के पास भेज दिया गया।

कुछ देर बार ही इंटरव्यू समिति के अध्यक्ष मिस्टर राबर्ट बाहर आये और अनिल से बोले, ''आप 10, जनपथ में कैसे रहते हैं? वह तो प्रधानमंत्री जी का आवास है।'' यह सुनकर अनिल ने विनम्रतापूर्वक कहा, ''जी सर, मैं प्रधानमंत्री शास्त्री जी का पुत्र अनिल हूँ।'' यह सुनकर मिस्टर रॉबर्ट तुरंत अनिल को अपने साथ अन्दर ले गये। वहाँ उन्हें विशेष सम्मान प्रदान किया गया। इंटरव्यू देने के बाद अनिल बड़े प्रसन्न भाव से घर पहुँचे।

शाम को जब लालबहादुर शास्त्री कार्यालय से घर लौटे तो अनिल प्रसन्न होकर उनसे बोले, ''बाबू जी, आज कॉलेज में मेरे साथ दो बातें हुईं। पहले तो किसी को यह पता नहीं था कि मैं आपका पुत्र हूँ। उस समय मेरे साथ सामान्य छात्रों की तरह ही व्यवहार किया गया, लेकिन घर का पता देखकर एक सदस्य को जब यह पता चला कि मैं प्रधानमंत्री का पुत्र हूँ तो उन्होंने मुझे विशेष सम्मान दिया।''

यह सुनकर शास्त्री जी बोले, ''तुमने बहुत अच्छा किया कि आवेदन-पत्र पर सामान्य छात्रों की तरह ही लिखकर भेजा और अपनी बारी की प्रतीक्षा की, लेकिन दूसरी बात से मैं सहमत नहीं हूँ।'' यह सुनकर अनिल शास्त्री ने पूछा, 'ऐसा क्यों बाबू जी? शास्त्री जी बोले, जब कॉलेज के स्टाफ को पता चला कि तुम प्रधानमंत्री के पुत्र हो तो तुम्हें विशेष सम्मान दिया गया। सम्मान व्यक्ति को अपनी पद-प्रतिष्ठा अथवा प्रभाव से नहीं, अपनी योग्यता से ही प्राप्त होना चाहिए। ■■■

शिक्षक का महत्व

एक बार डॉ. अब्दुल कलाम ने अपने सहयोगी सृजनपाल सिंह से कहा 'तुम युवा हो, शिक्षित हो। यह बताओ कि तुम स्वयं को किस प्रकार से याद किया जाना चाहते हो।' डॉ. कलाम का यह प्रश्न सुनकर सृजनपाल स्तब्ध रह गये। उन्होंने सोचा कि अभी तो उन्होंने अपने जीवन में कुछ विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त नहीं की हैं जिन्हें पूरा राष्ट्र अथवा विश्व याद रख सके।

सृजनपाल को असमंजस की स्थिति में देखकर डॉ. कलाम बोले, ''क्या हुआ, यह बताने में तुम इतना समय क्यों ले रहे हो? भाई, तुम्हें अभी तक के अपने कार्यकाल में जो भी उल्लेखनीय व बढ़िया कार्य लगा हो, वही बता दो।'' सृजनपाल ने विनम्रतापूर्वक कहा, सर, जीवन में अभी सर्वोत्तम करना शेष है। दूसरे, मैंने तो अभी तक ऐसी कोई विशेष उपलब्धि पाई भी नहीं है। ऐसे में कुछ समझ नहीं आ रहा कि आपके प्रश्न का क्या उत्तर दूँ?

डॉ. कलाम बोले, ''चलो यह बताओ, तुम अपनी उपलब्धियों के कारण याद किये जाना चाहते हो या अपने कार्य के माध्यम से?'' सृजनपाल ने कहा, ''दोनों कारणों से सर, लेकिन कृपया आप बताइये, आप स्वयं को किस रूप से याद किया जाना चाहते हैं - राष्ट्रपति, वैज्ञानिक, लेखक या मिसाइल मैन।'' अपने प्रश्न के बाद सृजनपाल डॉ.कलाम की ओर देख ही रहे थे कि वह बोले, ''मैं तो चाहूँगा कि लोग मुझे एक शिक्षक के रूप में याद रखें। एक शिक्षक ही ऐसा व्यक्ति होता है जो बच्चे को शिल्पकार की तरह तराशकर उसे जीवन में सफल बनाता है। इसलिए मैं प्रयास करूँगा कि लोग मुझे शिक्षक के रूप में ही जानें।'' यह सुनकर सृजनपाल डॉ. कलाम के आगे नतमस्तक हो गये और बोले, ''सर आप मेरे भी शिक्षक हैं। मैं आजीवन आपकी इन बातों को याद रखूँगा।'' ■■■

बिहार में अराजक माहौल

बिहार के हालात दिन व दिन बिगड़ते जा रहे हैं। लगता नहीं कि बिहार में कोई कानून है। अपराधी के मन में प्रशासन का डर समाप्त हो गया है। गत 8 फरवरी को 22 वर्षीय महिला आरक्षी प्रभा कुमारी की हत्या कटिहार के कोढ़ा में कर दी गई। प्रभा मुंगेर की रहने वाली थी। उस समय वह कटिहार पुलिस लाइन में पदस्थापित थी। प्रधानाध्यापक मनोज दास की बेटी उस दिन अपने घर जमालपुर से कटिहार आ रही थी। इसी क्रम में कोढ़ा क्षेत्र के भटवारा पंचायत के समीप एनएच पर उसकी हत्या हो गई।

मुख्य आरोपी हसन अरशद उर्फ छोटू है। प्रभा जब कोढ़ा थाना में कार्यरत थी तो फलका निवासी छोटू ने हिंदू बनकर उसे प्रेम जाल में फांसा था। जब छोटू की सचाई सामने आई तो प्रभा ने शादी से इंकार कर दिया। प्रतिशोध में छोटू प्रभा के अंतरंग फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर डालने लगा। वायरल वीडियो से परेशान प्रभा ने 3 बार महिला थाना और 1 बार सहायक थाना में इसकी गुहार लगा चुकी थी। लेकिन पुलिस पदाधिकारियों द्वारा कोई ठोस पहल नहीं की गई। छोटू का आपराधिक इतिहास है। 3 वर्ष पूर्व इसकी पहली पत्नी ने इसके प्रताड़ना से तंग आकर आत्महत्या कर ली थी। इसका टाटा 407 किस्त जमा नहीं होने के कारण नीलाम हो चुका है। इसपर शराब बेचने का भी आरोप था।

वैसे भी बिहार में पुलिस अपराधियों के सॉफ्ट टारगेट पर रहती है। नए डीजीपी आर एस भट्टी ने पुलिसकर्मियों को संदेश दिया था कि अपराधियों को आराम नहीं करने दें नहीं तो वे अपराध करेंगे। लेकिन उल्टे पुलिसकर्मी को ही अपराधी आराम नहीं करने दे रहे हैं। बिहार पुलिस के आंकड़े ही बताते हैं कि पुलिस पर हमले बढ़ गए हैं। हाल के समय में 30 बार पुलिस टीम पर हमले हुए हैं। 21 फरवरी को सीतामढ़ी के पुपरी थाना क्षेत्र में जाम हटाने गई पुलिसकर्मियों को ग्रामीणों ने दौड़ा-दौड़ा कर पीटा। 28 जनवरी को जमुई में महिला सिपाही के कपड़े तक फाड़ डाले गए। 11 फरवरी को बेगूसराय में एक युवक की हत्या के बाद आक्रोशित लोगों ने थाना पर हमला कर दिया। इसके पहले 17 जनवरी को पटना एसएसपी कार्यालय से 1 किलोमीटर दूर और राज्य पुलिस मुख्यालय से 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित लोदीपुर में पुलिस टीम पर लोगों ने हमला कर दिया। पुलिस से मारपीट कर स्थानीय लोग आरोपियों को छुड़ा ले गए। इस घटना के ठीक 7 दिन पहले ही पटना के जेठूली में पार्किंग विवाद में 3 लोगों की हत्या हो गई थी।

बिहार के एडीजी (कानून व्यवस्था) संजय सिंह द्वारा बताए गए आंकड़ों के मुताबिक, 2020 और 2021 में 340 बार पुलिस पर हमले हुए लेकिन अकेले 2022 में 450 से अधिक बार विभिन्न जगहों पर पुलिस टीम पर हमले हुए।

बिहार में मात्र 76 पुलिसकर्मियों के जिम्मे एक लाख लोगों की सुरक्षा है, जबकि राष्ट्रीय औसत 195.39 का है। पिछले पांच महीनों से प्रति महीने औसतन 300 हत्याएं बिहार में हुई है। हत्या के मामले में एनसीआरबी (NCRB) की रिपोर्ट के अनुसार बिहार का स्थान दूसरा और जमीनी विवाद के मामले में पहला स्थान है। विगत पांच महीने में संज्ञेय अपराधों की घटना में 256 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। बिहार की जनता ने नीतीश कुमार को कानून व्यवस्था की शर्त पर उन्हें सत्ता की कमान दी थी। गत 17 वर्षों से वे ही बिहार के मुखिया हैं। गृह विभाग भी उन्हीं के जिम्मे है। ऐसे में उन्हें तत्काल ठोस कदम उठाने होंगे। जिससे बिहार की जनता का विश्वास प्रशासन पर बहाल हो सके।

@Sanjeevjournal

टी. राजा सिंह
(राजनेता)

न ऊंच-नीच,
न जात-पात,
बस इतनी सी है
संघ की बात,
गर्व से कहो हम हिंदू हैं।

@ChampatRaiVHP

बिहार के मुस्लिम बाहुल्य किशनगंज में हनुमान जी व दुर्गा जी के दो मंदिरों व उनकी मूर्तियों को तोड़ कर जलाए जाने की घटना बेहद निंदनीय व दर्दनाक है। प्रशासन मामले में मूक रहा तो हिंदू समाज आंदोलन को विवश होगा, नीतीश कुमार।

@vinod_bansal

विनोद बंसल
(राष्ट्रीय प्रवक्ता)
विश्व हिन्दू परिषद

मिलिंद परांडे
(राष्ट्रीय महामंत्री,विहिप)

विश्व हिन्दू परिषद जो हिन्दू समाज-धर्म- संस्कृति के सेवा और सुरक्षा कार्य करती है, उसके लिये समाज के हितैषी तथा कार्यकर्ता स्वयं भी सहयोग करते है, समर्पण करते है.

@MParandeVHP

नाबालिग दलित लड़की को ब्लैकमेल कर रहा था मुस्लिम युवक

-विपुल कुमार सिंह

बिहार में लव जिहाद पर कोई कारगर कार्रवाई नहीं होने पर जेहादियों के हौसले बढ़े हुए हैं। इस बार बेतिया में एक मुस्लिम युवक द्वारा शादी का झांसा देकर एक नाबालिग दलित लड़की के यौन शोषण का मामला सामने आया है। 25 वर्षीय सोनू अली ने इस लड़की को प्यार के जाल में फंसाया। अपने बड़े भाई इस्राफील अली और बहनोई सईप मियां के साथ मिलकर अश्लील वीडियो बनाया। इसके बाद इसी वीडियो के आधार पर उसका ब्लैकमेल करता रहा। लड़की प्रेग्नेंट हुई तो उसे छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने आरोपी सोनू , उसके बड़े भाई इस्राफील और बहनोई शिकारपुर थाना क्षेत्र के दिउलिया निवासी सईप मियां को गिरफ्तार कर लिया है।

यह मामला जिले के शिकारपुर थाना क्षेत्र के नरकटियागंज नगर का है। यह दलित लड़की रक्सौल की रहने वाली है।

मामले की जानकारी मिलते ही पीड़िता के पिता ने शिकारपुर थाना में केस दर्ज कराया। एफआईआर में पीड़ित लड़की के पिता ने बताया है कि सोनू अली अपनी बहन के घर दिउलिया में रहता था। 2021 में जब उनकी बेटी पढ़ने जाती थी तब उसने बहला फुसलाकर अपने प्यार में फंसा लिया। इसके बाद वह बच्ची को दिउलिया स्थित अपनी बहन के घर लेकर गया और उसके साथ रेप किया। रेप के दौरान आरोपी युवक की बहन के बेटे ने वीडियो बना लिया। जिसके बाद आरोपी वीडियो दिखाकर शादी का दबाव बनाने लगा।

आरोपी ने लगातार दो साल तक पीड़िता का यौन शोषण किया। वह पीड़िता को अपने साथ रक्सौल और दिउलिया के एक किराए के मकान में रखकर उसके साथ शौषण करता रहा। जब वह गर्भवती हो गई तो उसको छोड़ कर फरार हो गया।

पीड़ित लड़की के पिता ने एफआईआर में बताया कि 2 फरवरी को जब वो अपनी लड़की को लेकर आरोपितों के घर रक्सौल गए तो मारपीट कर दोनों को भगा दिया गया। इस दौरान दिउलिया स्थित आरोपित की बहन बहनोई ने भी उनको जलील किया। जिसके बाद थाने पहुंच कर शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने एफआईआर के तुरंत बाद कार्रवाई करते हुए आरोपी युवक सोनू अली (25 वर्ष) को गिरफ्तार कर लिया है। पिता के अनुसार उनकी बेटी ने जब बताया कि उसके साथ रेप किया गया तो वह शिकारपुर थाने में शिकायत दर्ज कराने जा रहे थे, लेकिन गांव के कुछ लोगों ने पंचायती से मामले को सुलझाने की बात कह उन पर दबाव बनाया।

पंचायती के फैसले के बाद युवक ने शादी कर अपने साथ ले जाने की बात कही, लेकिन लड़का दूसरे धर्म का था जिसके वजह से उसके समाज के लोग नहीं माने। अंत में युवक पीड़ित लड़की को लेकर किराए के मकान में रहने लगा। इस दौरान जब वह गर्भवती हो गई है तो उसे किराए के मकान में छोड़कर फरार हो गया।

2021 में पीड़िता के पिता ने शिकारपुर थाने में की शिकायत

2021 में पीड़ित लड़की के पिता ने शिकारपुर थाने में अपनी बेटी के अपहरण की शिकायत दर्ज की थी। उस समय उसने पुलिस को बताया था कि उनकी बेटी बोर्ड की परीक्षा देने जा रही थी और गायब हो गई है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए लड़की को बरामद कर उसके घरवालों को सौंप दिया था। इधर शिकारपुर थानाध्यक्ष रामाश्रय यादव ने बताया कि मामले में एफआईआर दर्ज कर ली गई है। ■■■

बिहार में होली के विविध रंग

-शुभ किरण

गुलाल की बौछार, सखियों की ठिठोली और जवानों की मस्ती में झूमती टोली, कहीं मीठी गुझियों की सुगंध तो कहीं पुआ पकवान से सजी थालियां। होली का यही हुड़दंग और माहौल फाल्गुन को फगुआ बना डालता है। होली के इस रंगीले त्योहार को बिहार में भी कई तरीकों से मनाया जाता है। कहीं पानी से भरी बौछार तो कहीं चैती की बयार, कहीं बुढ़वा होली का अंदाज तो कहीं छाता होली का अनूठापन। बिहार में होली के इन्हीं विविध रंगों पर डालते हैं एक नजर।

मिथिला की होली- फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाये जाने वाले इस त्योहार में मिथिला की महिलाएं सबसे पहले होलिका दहन के लिए पूजा की तैयारी करते हुए गीत गाती हैं। अगले दिन लोग सबसे पहले अपनी कुल देवी की पूजा कर उन्हें गुलाल लगाते हैं और उसके बाद घर और पड़ोस के लोगों के साथ रंग खेला जाता है और पकवान खाए जाते हैं। इस दिन से यहां सप्तडोरा पर्व आरंभ होता है जिसमें बुजुर्ग महिलाएं अपनी बांह में कच्चा धागा बांधने के बाद 'सप्ता-विपता' की कहानी नई पीढ़ी को गीतों के द्वारा सुनाती हैं।

भोजपुर की होली- यहां होलिका दहन पर सबसे पहले कुल देवी-देवता को बारा-पुआ का चढ़ावा चढ़ाया जाता है, उसके बाद होलिका जलाई जाती है। होलिका दहन

से पहले घरों में सबको सरसों का उबटन लगाया जाता है और देह से उतरे उबटन को होलिका दहन के स्थान पर होलिका जलाते समय स्वाहा कर दिया जाता है। माना जाता है कि ऐसा करने से होलिका के साथ घर के सारे दुख दर्द भी जल जाएंगे और घर में स्वास्थ्य और समृद्धि का वास होगा। होलिका दहन के समय लोग होली गीत गाते हुए स्थान की परिक्रमा करते हैं। अगली सुबह लोग होलिका की राख एक दूसरे को लगाते हैं और गीत गाते हुए राख को हवा में उछालते हैं। इसके बाद पुरुषों की टोली फाग गाते हुए पूरे गांव व मोहल्लों में सबके घर जाती है और रंग-गुलाल की पिचकारी और मीठी शरारतों के साथ भांग का मजा लिया जाता है। दोपहर तक होली चलती है।

इसके बाद लोग नहा धोकर मंदिर जाते हैं और चैती गाने का आरंभ करते हैं। शाम को सभी लोग एक दूसरे के घर जाकर बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं और होली की शुभकामनाएं देते हैं।

मगध की बुढ़वा होली- मगध की धरती पर भी होली मनाई जाती है, पर एक अलग अंदाज में। यहां बुढ़वा होली मनाने की परंपरा है जो होली के अगले दिन मनाई जाती है। इसे बुढ़वा मंगल होली भी कहते हैं। मान्यता है कि यहां के राजा होली के दिन बीमार थे, इसलिए लोगों ने होली नहीं मनाई। जब राजा को यह बात पता चली तो उन्होंने अगले दिन होली मनाने की घोषणा की। तभी से यह परंपरा चली आ रही है। होली के अगले दिन यहां झुमटा निकालने का रिवाज है। झुमटा निकालने वाले लोग होली के गीत गाते हैं और एक दूसरे को मिट्टी कीचड़ में लपेटकर दोपहर में रंग और फिर शाम में गुलाल लगाकर इस त्योहार का समापन करते हैं। नवादा, गया, औरंगाबाद, अरवल, जहानाबाद और पटना के कुछ जगहों पर इस तरह की होली देखने को मिलती है।

पटना की कुर्ताफाड़ होली- यूं तो पटना की होली पारंपरिक तरीके से ही मनाई जाती है, लेकिन कुछ जगहों पर कुर्ता फाड़ होली चलती है। लोग इस कदर मतवाले हो जाते हैं कि रंग खेलते-खेलते एक दूसरे के कुर्ते भी फाड़ डालते हैं। हालांकि ऐसी होली अब शहर में कम और कस्बों में ज्यादा देखने को मिलती है।

समस्तीपुर की छाता होली- समस्तीपुर के पटोरी अनुमंडल में धमौन गांव में छाता-पटोरी होली होती है। यहां हरियाणा और बिहार की मिली जुली संस्कृति की छाप देखने को मिलती है। लोग होली से दस दिन पहले बांस के रंगीन छाते बनाते हैं जिसमें घण्टियां लगी होती हैं। होली के दिन सभी ग्रामीण अपने कुलदेवता स्वामी निरंजन मंदिर में एकत्रित हो, अपने अपने टोलों के विशाल छातों को घुमाते हैं। झाल मंजीरे की थाप और गीत गायन के साथ एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाया जाता है। इन्हीं रंगीन छातों के साथ एक भव्य झांकी भी निकाली जाती है जो महादेव मंदिर पर समाप्त होती है। लोग घर से निकलते हुए होली गीत गाते हैं और घर लौटते हुए चैती गाते हैं। यह सूचक है फाल्गुन के जाने और चैत्र महीने के आने का।

बिहार में बंगाली, गुजराती, मारवाड़ी और मराठी होली भी देखने को मिलती है। बंगाली लोग इस दिन भगवान सत्यनारायण की पूजा करते हैं और होलिका दहन के अगले दिन गुलाल और

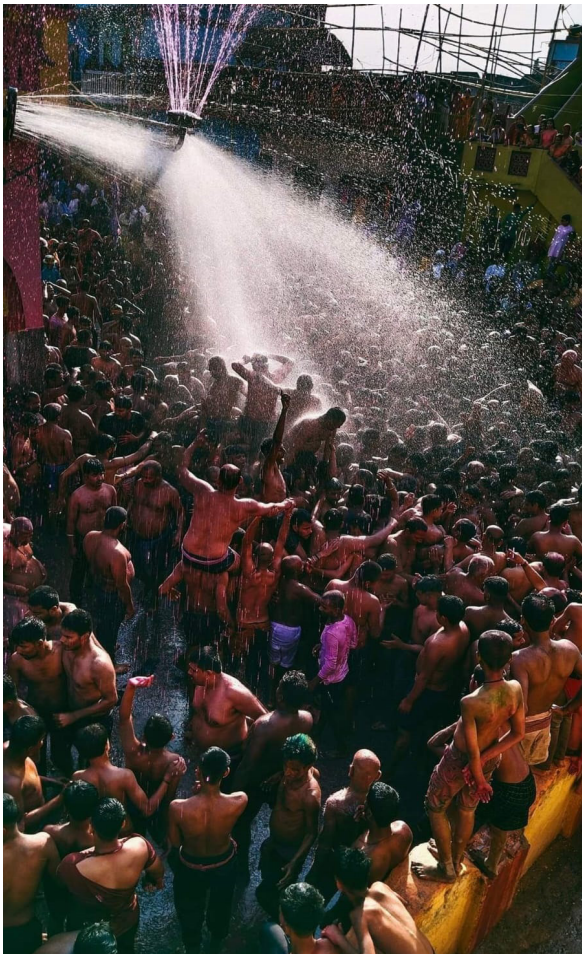

अबीर की सूखी होली खेलते हैं। गुजराती परिवारों में होलिका दहन के बाद फूलों और गुलाल से **गोविंदा होली** खेली जाती है। मारवाड़ी समाज के लोग होली के सात दिन पहले **होलाष्टक** मनाते हैं। इस दौरान कोई मांगलिक कार्य नहीं होता।

होलिका दहन के दिन शाम में महिलाएं पारंपरिक वस्त्र पहनकर ठंडी होलिका की पूजा कर पति और परिवार की लंबी आयु की प्रार्थना करती हैं। रात में **होलिका** दहन के बाद उसकी राख को घर पर लाकर सभी लोग लगाते हैं और अगले दिन से गणगौर पूजा प्रारंभ होती है जो 16 दिनों तक चलती है। तो वहीं, जैन परिवार के लोग होली के दिन मंदिर में जाकर पूजा अर्चना करते हैं। मराठी परिवार होली को **रंग पंचमी** के नाम से जानते हैं। यहां होली के दिन पूरन पोली व्यंजन जरूर बनता है।

संन्यासियों का अप्रतिम योगदान

- संजीव कुमार

गतांक से जारी....

कहा जाता है जनता में भाव होते हैं भाषा नही। लक्ष्य की ललक होती है परंतु लक्ष्य तक पहुंचने के रास्ते नहीं ज्ञात होते हैं। नेता जनता की भाव को भाषा देता है। उनके साथ संघर्ष करता है और उन्हें उनके लक्ष्य तक पहुंचाने में मदद करता है। कुछ ऐसा ही अंग्रेजों के प्रताड़ना से त्रस्त संयुक्त बंगाल की जनता के साथ हुआ जब संन्यासियों ने उन्हें मार्ग बताया और अंग्रेजों से मुक्ति का सफल प्रयोग। पलासी के युद्ध के बाद अंग्रेज बंगाल में अपनी हुकूमत कायम कर चुके थे। ऐसे में संन्यासियों ने अंग्रेजों के विरूद्ध त्रस्त जनता को एकत्र कर अंग्रेजों की कोठियों पर हमला किया और कई स्थानों पर अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की। ढाका, रामपुर, पटना, सारण, पूर्णिया, मैमनसिंह इत्यादि स्थानों पर अंग्रेजों को उनके कोठियों से भगा दिया गया था। इस पूरे संघर्ष के कुछ प्रमुख संन्यासी नेतृत्व थे। जिसमें मजनू शाह मलंग, फकीर मूसा शाह, भवानी पाठक और देवी चौधरानी जैसे लोग प्रमुख थे।

मजनू शाह मलंग– मजनू शाह कानपुर के रहने वाले थे। दबिस्तान के लेखक फानी का मानना है कि ये सच्चे मुसलमान नहीं, अपितु हिंदू ही थे। इनका संबंध फकीरों के मदारी संप्रदाय से था। इसका उल्लेख संन्यासियों के साथ किया जाता है। बक्सर की लड़ाई के बाद वह अपने समर्थकों के साथ बीरभूम पहुंचे। यहां के नवाब की पत्नी लाल बीबी और हमीदुद्दीन ने इन्हें अंग्रेजों से लड़ने के लिए समर्थन दिया।

हमीदुद्दीन ने मजनू से कहा, "जाओ और संन्यासियों के साथ मिलो। उनके साथ हथियार उठाओ। फिरंगियों (अंग्रेजों) से चावल और पैसे छीनो और भूखे लोगों में बांटो।"

मजनू शाह ने भारत की बिखरी ताकत को एकजुट कर कंपनी राज पर हमला बोला। कई लड़ाईयों में उन्होंने अंग्रेजों को काफी नुकसान पहुंचाया। 15 नवंबर, 1776 को संन्यासियों और कंपनी के सेना के बीच जोरदार टक्कर हुई। 1774-75 में मजनू शाह मलंग ने बिहार और बंगाल के विद्रोहियों को फिर से संगठित करने की कोशिश की। 15 नवम्बर, 1776 को मजनू की सेना और कंपनी की सेना के बीच टक्कर उत्तर बंगाल में हुई। अंग्रेजी सेना चुपचाप विद्रोहियों के शिविर के पास पहुँच गयी थी। विद्रोही पहले पीछे हटे और अंग्रेजी सेना को जंगल की तरफ खींच ले गये। फिर अचानक घूमकर अंग्रेजी सेना पर टूट पड़े कई अंग्रेजी सैनिक मारे गये और अंग्रेज सेनापति लेफ्टिनेन्ट राबर्टसन गोली की चोट से घायल हो गया। इस तरह अंग्रेजी सेना के हाथ से निकल जाने में मजनू शाह और उनके साथी कामयाब हुए।

मजनू शाह ने कई साल बिहार और बंगाल में घूम-घूमकर विद्रोहियों को संगठित करने का प्रयास किया। सेना के लिए कितने ही जमींदारों से कर भी वसूल किया। अंग्रेज शासकों ने उन्हें पकड़ने की बार-बार कोशिश की, पर असफल रहे। 29 दिसम्बर, 1786 को अंग्रेजो से युद्ध करते हुए उनका घेरा तोड़कर निकलने में मजनू शाह सख्त घायल हुए और एक-आध दिन बाद ही संन्यासी विद्रोह के इस सर्वश्रेष्ठ नेता की मृत्यु हो गयी। ■■■

अमृत काल का पहला लोक-कल्याणकारी बजट

सुरेश रूँगटा

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने देश का 75वां और अमृतकाल का प्रथम बजट पेश करते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था को दुनिया में एक चमकते सितारे के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से सात प्राथमिकताओं (समावेशी विकास, वंचितों को वरीयता, बुनियादी ढांचा विस्तार, कारोबारी सुगमता, हरित विकास, युवा-शक्ति एवं वित्तीय क्षेत्र) को रेखांकित किया है। इस दृष्टि से ये प्राथमिकता इस बजट के सप्तऋषि हैं। यह बजट देश के विकास दर को 7 प्रतिशत बनाये रखने तथा भारत को विश्व स्तर पर तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा; जो 2047 तक भारत को एक समृद्ध राष्ट्र बनाने का मजबूत बुनियाद देने का माध्यम बनेगा।

यह बजट ''सबका साथ-सबका विकास'' की मूल अवधारणा के अनुरूप सभी वर्ग, समुदाय एवं क्षेत्र के विकास, उत्थान एवं समृद्धि लाने का एक रोड-मैप है। वास्तव में यह बजट समावेशी विकास को बढ़ाने वाला साबित होगा। आजादी के अमृतकाल के पहले बजट में कृषि को विशेष तरजीह दी गई है। प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर एक करोड़ किसानों के लिए ''पीएम प्रणाम योजना'' शुरू की जाएगी। कृषि के लिए डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर और अन्य गतिविधियों के जरिए किसानों को समृद्ध बनाने की योजना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पशुपालन, मत्स्य पालन और दुग्ध उत्पादन पर फोकस रखते हुए कृषि कर्ज का दायरा बढ़ाकर 20 लाख करोड़ रूपया कर दिया गया है। मोटे अनाज (श्री अन्न) को प्रोत्साहन देने से किसानों के लिए यह लाभदायक होने के साथ-साथ उनके लिए पोषण की पूर्ति भी करेगा। यह विदित है कि भारतीय किसान, यूरिया के लिए प्रति बोरा 266.50 रुपए का भुगतान करते हैं जिसमें प्रति बोरा 2317.50 रूपया सब्सिडी है। इसी तरह डीएपी के लिए 1350 रुपए प्रति बोरे का भुगतान करते हैं, जिसमें 2500.65 रुपए सब्सिडी है।

इस बार का यह बजट वर्तमान से अधिक देश की आजादी के 100वें वर्ष के समय भारत को एक उन्नत एवं समृद्ध राष्ट्र के रूप में प्रतिस्थापित करने की पहल वाला बजट है। बजट में डिजिटल इंडिया, फिनटेक और कौशल विकास पर फोकस यही दशार्ता है कि सरकार भविष्य की चुनौतियों को ध्यान में रखकर अपनी तैयारी कर रही है। ''प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना'' के तीन चरण ला चुकी सरकार, जल्द ही चौथा चरण शुरू करने जा रही है। खास बात यह है कि अब युवाओं को आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और रोबोटिक्स जैसी विद्याओं में दक्ष बनाया जायेगा। इसके लिए 30 स्किल इंडिया इंटरनेशनल सेंटर खोलने की तैयारी है। युवा बीच में ही प्रशिक्षण न छोड़े इसके लिए 47 लाख युवाओं को डायरेक्ट बेनेफिट के माध्यम से भत्ता देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। 157 नये नर्सिंग कॉलेज खुलेंगे, जहाँ नर्सिंग की ट्रेनिंग दी जाएगी। फर्मास्युटिकल्स में शोध एवं नावाचार को बढ़ावा देने के साथ ही शिक्षकों के प्रशिक्षण का नया ढांचा तैयार किया जायेगा। बच्चों और किशोरों के व्यक्तित्व निर्माण में मददगार नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी बनायी जायेगी। इसकी सुविधा का लाभ कहीं से भी और किसी भी समय उठाया जा सकेगा।

देश को आर्थिक विकास के पथ पर आगे बढ़ाने के अपने संकल्प के तहत सरकार ने वर्ष 2023-24 के केन्द्रीय बजट में पूंजीगत खर्च पर विशेष जोर दिया है। देश की आधारभूत संरचना को मजबूत करने के लिए 10 लाख करोड़ रुपए आवंटित किये गये हैं। यह जीडीपी का 3.3 प्रतिशत है। पूंजीगत व्यय से विकास में चार गुणा बढ़ोत्तरी होती है। इसका सीधा लाभ मूलभूत ढांचे की गुणवत्ता पर होगा तथा कार्यक्षमता, निर्यात, रोजगार में वृद्धि तथा निजी निवेश को साधने में सहायता मिलेगी। इसमें राज्यों को प्रोत्साहन देने के लिए केन्द्र 50 वर्षों के लिए 1.3 लाख करोड़ रुपए के ब्याज मुक्त कर्ज देने की पेशकश की है। भारतीय रेलवे को नये अवतार में लाने के उद्देश्य से केन्द्र सरकार ने इसके बजटीय प्रावधान को बढ़ाकर 2 लाख 41 हजार करोड़ रुपए कर दिया है। रेलवे को पूंजीगत व्यय के लिए दी गई यह अभी तक की सबसे अधिक राशि है। पिछले 9 वर्षों के दौरान इसमें 9 गुणा वृद्धि की गई है। सड़क परिवहन व राजमार्ग के बजट में भी 35 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। सड़क निर्माण के क्षेत्र में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। 2014-15 की तुलना में आज देश में कुल हाईवे की लंबाई करीब डेढ़ गुणा से ज्यादा बढ़ी है। इसके अलावा क्षेत्रीय हवाई परिवहन बेहतर करने के लिए देश भर में 50 हवाई अड्डों को उन्नत एवं पुनरूद्धार किया जाएगा। जी-20 की मेजबानी के तहत देश के 50 पर्यटन स्थलों को चैलेंज मोड पर विकसित करने की घोषणा की गई है।

अंतिम छोर पर खड़े कमजोर एवं वंचित तबके के लोगों के लिए सरकार नई योजना लाने जा रही है। ''पीएम विश्वकर्मा

कौशल सम्मान योजना'' के अंतर्गत वंचितों को उनके हुनर में निपुण कर उन्हें आवश्यक औजारों के लिए ऋण के साथ-साथ उत्पादों में गुणवत्ता बढ़ाने और उचित बाजारों तक पहुंच बढ़ाने की व्यवस्था करने की मंशा जाहिर की गई है। जेल में बंद ऐसे निर्धन कैदियों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी, जो जुर्माना या जमानत राशि की व्यवस्था करने में असमर्थ हैं। यह छोटे-मोटे अपराधों में जेल गये निर्धन कैदियों की रिहाई की दिशा में बड़ा कदम होगा। बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र को लेकर कई घोषणा की गई है। प्रमुख रूप से देश को वर्ष 2047 तक सिकल सेल एनीमिया मुक्त बनाने की घोषणा की गई है। इस रोग को खत्म करने के लिए केन्द्र सरकार मिशन मोड में काम करेगी। आदिवासी इलाकों के लोग इस बीमारी से ज्यादा पीड़ित रहते हैं। इसी तरह 3.5 लाख आदिवासी छात्रों के लिए एकलव्य मॉडल आवासीय स्कूलों के लिए 38 हजार शिक्षकों और कर्मचारियों की भी भर्ती की जाएगी। नये शिक्षकों की भर्ती होने से बच्चों की पढ़ाई में मदद मिलेगी।

मोदी सरकार देश के साथ-साथ पड़ोस के देशों का भी विशेष ध्यान रखती है। ''पड़ोस प्रथम'' नीति के तहत भूटान के लिए 2400 करोड़, नेपाल के लिए 550 करोड़, मॉरीशस के लिए 460 करोड़, मालदीव के लिए 400 करोड़, म्यामांर के लिए 400 करोड़ रुपए और अफगानिस्तान के लिए 200 करोड़ रु. उनके विकास कार्यों एवं सहायता के लिए बजट में आवंटित किए गए हैं। वर्ष 2070 तक नेट जीरो के लक्ष्य को हासिल करने के लिए इस बजट में ग्रीन ग्रोथ का रास्ता अपनाया गया है। इस हेतु बजट में 35 हजार करोड़ रुपए का आवंटन ऊर्जा परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा के लिए शुरूआती निवेष के उद्देश्य से किया गया है। 15 साल पुराने वाहनों और एम्बुलेंस को हटाने में केंद्र की सरकार राज्यों को पैसे की कोई कमी नहीं होने देगी। रेलवे इसी वर्ष से हाइड्रोजन ट्रेने चलाने की तैयारी में जुटी है।

देश के सकल घरेलू उत्पाद यानि जीडीपी और रोजगार में छोटे उद्योगों के महत्व को देखते हुए वित्त मंत्री ने बजट में सूक्ष्म, लघु और मध्यम (एमएसएमई) उद्योग क्षेत्र के लिए ऋण गारंटी योजना को नवीनीकरण करने के लिए 9000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। सरकार ने महिलाओं के लिए अधिक ब्याज दर पर बचत योजना लाने की घोषण की है। मार्च 2025 तक दो वर्ष की अवधि के लिए वन टाइम नई लघु बचत योजना, ''महिला सम्मान बचत प्रमाण पत्र'' उपलब्ध कराया जायेगा। लड़कियां और महिलाएं इस योजना का लाभ ले सकती हैं। इस पर 7.5 प्रतिशत सालाना की दर से ब्याज दिया जाएगा और जरूरत पड़ने पर पैसे की आंशिक निकासी भी की जा सकती है। जल जीवन मिशन को उच्च वरीयता वाली श्रेणी में रखने के साथ ही नदी जोड़ और राष्ट्रीय गंगा योजना के लिए इस बजट में गत वर्ष से ज्यादा आवंटन किया गया है। जल जीवन मिशन के लिए 70 हजार करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है तो नमामि गंगा मिशन के तहत राष्ट्रीय गंगा योजना के लिए 1200 करोड़ और नदी जोड़ योजना के लिए 2100 करोड़ रुपए का आवंटन बजट में किया गया है।

मध्य वर्ग व नौकरी पेशा लोगों को आयकर में बड़ी राहत देते हुए 7 लाख रुपए तक की आय (58333 रुपए प्रति माह) को कर मुक्त करने की घोषणा की गई है। उपरोक्त आय वर्ग के लोगों के लिए इस टैक्स प्रणाली में किसी भी तरह की टैक्स सेविंग (बचत) करने की अब जरूरत नहीं रह जाएगी। पुरानी सेविंग टैक्स प्रणाली भी अभी जारी रहेगी। पुरानी प्रणाली के अंतर्गत 2.5 लाख रुपए से ज्यादा आय पर ही टैक्स गणना शुरू हो जाती है। आयकर विभाग के अनुसार देश में 90 प्रतिशत से ज्यादा करदाता 7 लाख रुपए से कम आय वाले हैं जिनकी संख्या 7 करोड़ से कुछ ज्यादा है। करों मे रियायत से सरकार को राजस्व में करीब 37 हजार करोड़ रुपए की क्षति होगी जिस राशि का करदाता बचत या उपभोग में उपयोग कर सकते हैं। इससे वस्तुओं की मांग बढ़ेगी फलतः रोजगार में भी वृद्धि होगी।

कोरोना संकट और रूस-यूक्रेन युद्ध से उपजे वैश्विक संकट के बावजूद बजट के आकार को बढ़ाकर 45 लाख करोड़ रूपया करना भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को दर्शाता है। बजट में राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 5.9 प्रतिशत तक घटाने का लक्ष्य रखा गया है जो चालू वित्त वर्ष के संशोधित अनुमान 6.4 प्रतिशत से कम है। इस बजट से आर्थिक वृद्धि में गति आने की भरपूर संभावनाएं हैं। इसमें भारत को विकसित देशों की श्रेणी में शामिल करने की आवश्यक पहल करने की क्षमता है। यह भविष्योन्मुखी बजट एक दशक के भीतर भारत को 10 ट्रिलियन (लाख-करोड़) डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की राह तैयार करने वाला है। अमूमन बजट को ''आम बजट'' के रूप में संबोधित किया जाता है, लेकिन अपनी विशेष प्रकृति के कारण इस बार का बजट 'आम' नहीं बल्कि ''खास बजट'' बन गया है। ■■■

बोधगया मंदिर

गुप्तकालीन स्थापत्य में बोधगया के मंदिर का विशिष्ट स्थान है। यह मंदिर बिहार राज्य के गया शहर से 6 मील दक्षिण प्राचीन उरुबिल्व ग्राम के निकट स्थित है। यह वही पवित्र स्थान है, जहाँ भगवान बुद्ध ने संबोधि प्राप्त की थी।

कतिपय विद्वानों ने इसका निर्माण मौर्यकाल में माना है। उनके अनुसार, जब उपगुप्त ने अशोक को उस स्थान से परिचय कराया, जहाँ भगवान बुद्ध को संबोधि प्राप्त हुई थी, तब अशोक ने उस स्थान पर एक बोधिगृह का निर्माण करवाया तथा इस बोधिगृह से चारों ओर कुछ हटकर ईंटों की एक बेष्टनी बनवायी। अब भी नींव में लगी वे ईंटें इसकी पुष्टि करती है। बाद में इसके स्तंभ, सूची एवं उष्णीष प्रस्तर से निर्मित हुए, जिनमें अनेक स्तंभ एवं उष्णीय वर्तमान हैं।

मूल बोधिगृह तो अब नष्ट हो गया है, किंतु उसकी आकृति भरहुत स्तूप के वेदिका स्तंभ पर अंकित है, जिसके आधार पर इसका मूल्यांकन किया जा सकता है। बोधिगृह की छत खुली थी। उसके बीच में बोधिमंडप या वज्रासन था तथा उसके सामने चार अर्द्धस्तंभ थे। बज्रासन के पीछे बोधिवृक्ष था, जिसकी शाखाएँ खुली छत से निकलकर ऊपर आकाश की ओर विस्तृत थीं। वृक्ष के दोनों ओर छोटे स्तंभों के ऊपर धर्मचक्र तथा त्रिरत्न के चिह्न अंकित थे।

उपर्युक्त आकृति वर्त्तमान बोधगया मंदिर से सर्वथा भिन्न है। अतएव, वर्तमान मंदिर मौर्यकालीन नहीं हो सकता। यह मंदिर भरहुत एवं साँची के सदृश है तथा इसका निर्माणकाल उन दोनों के बीच का है। इसका अलंकरण भी भरहुत के समान है। इस पर उत्कीर्ण लेखों से विदित होता है कि इंद्राग्निमित्र की रानी कुरंगी तथा ब्रह्ममित्र की रानी नागदेवता का यह धार्मिक दान था। संभवतया इसी आधार पर हैवल ने इस मंदिर का निर्माणकाल प्रथम शताब्दी माना है। लेकिन, बाद में इस मंदिर का कायाकल्प हो गया। वर्तमान मंदिर की निर्माण शैली साँची भरहुत-मंदिर से बिलकुल पृथक है।

अन्य शिल्पविशारदों ने वर्तमान मंदिर की स्थापना गुप्तयुग में मानी है। उनके अनुसार, लंका के राजा मेधवर्मन ने समुद्र गुप्त से बोधगया में एक विहार या मंदिर निर्माण करने की अनुमति माँगी थी। इसकी पुष्टि इत्सिंग के यात्रा वर्णन से भी होती है। पाटलिपुत्र की खुदाई से प्राप्त गुप्तकालीन मिट्टी की एक मुहर पर बोधगया मंदिर की प्रतिकृति अंकित है। इसके अतिरिक्त बोधगया से प्राप्त महानाम के शिलालेख से भी यह ज्ञात होता है कि इसका निर्माण गुप्तसंवत 269, अर्थात सन 588-89 ई० के पहले हुआ। इस अभिलेख के अनुसार, बोधिमंडप के चारों ओर एक मंदिर था। इन तथ्यों से तो यही सिद्ध होता है कि इस मंदिर का निर्माण सन 588-89 ई० के कुछ पहले गुप्तकाल में ही हुआ होगा। अतः यह आश्चर्य की बात नहीं है कि चीनी यात्री फाहियान ने अपने यात्रा वर्णन में कहीं इसका उल्लेख नहीं किया है। इतना आकर्षक एवं प्रभावशाली मंदिर उसकी दृष्टि से कैसे बच सकता, जबकि उसने अति सूक्ष्म तथ्यों का भी वर्णन किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि नरसिंहगुप्त बालादित्य (सन 496-520 ई०) के समय में इसका निर्माण हुआ। इसी के समय में एक गगनचुंबी शिखरयुक्त मंदिर का निर्माण नालंदा में किया गया था।

राखालदास बनर्जी ने इस मंदिर को गुप्तकाल के बाद का निर्मित माना है। उनके अनुसार गुप्तकालीन मंदिरों का इतना विकसित रूप अन्यत्र नहीं दीखता प्रारंभिक गुप्तकालीन मंदिर की छत चिपटी होती थी, सामने एक बरामदा होता था तथा उसमें शिखर का अभाव था। इनमें कोई भी लक्षण वर्तमान बोधगया मंदिर में नहीं है। अतएव, गुप्तकाल के बाद इसका निर्माणकाल मानना अनुचित न होगा। युवान च्वांग ने बोधगया मंदिर का जो वर्णन प्रस्तुत किया है, वह वर्तमान मंदिर से अतीव समता रखता है। युवान च्वांग ने स्पष्ट कहा है- 'नालंदा में नरसिंहगुप्त बालादित्य द्वारा निर्मित 300 फुट ऊँचा एक मंदिर था, जो बोधगया मंदिर के सदृश था।' इस विवरण से यह विदित होता है कि युवान-व्यांग के समय तक इस मंदिर का निर्माण अवश्य हो चुका था। कनियम ने भी इसकी पुष्टि की है।

जारी है...

साभार : मंदिर स्थापत्य का इतिहास

क्यों आवश्यक है जैविक खेती

वी0 के0 सिंह

आज विश्व के साथ भारत भी पेय जल की समस्या से जूझ रहा है। 50% से कम आबादी को शुद्ध पेय जल उपलब्ध है। नीति आयोग के अनुमान के अनुसार 2030 तक भारत के 21 प्रमुख शहरों में भूमिगत जल खत्म होने के कगार पर होगा। भारत विश्व के कुल भूमिगत जल का 25% उपयोग कर रहा है, जो चीन और अमेरिका के उपयोग से भी ज्यादा है। भारतवर्ष में विश्व की 18% आबादी रहती है जबकि विश्व का मात्र 4 % जल श्रोत यहां उपलब्ध है। इस कमी के बावजूद भारतीय विश्व के उन देशों में है जो सबसे ज्यादा जल का उपभोग करते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार 2050 तक यह समस्या और जटिल हो जाएगी।

एक रिपोर्ट के अनुसार, ''पृथ्वी का जल स्तर औसतन तीन से चार फिट प्रतिवर्ष गिर रहा है। बिहार के कई जिलों में भूमिगत जल स्तर की स्थिति पिछले 30 सालों में चिंताजनक हो गई है। कुछ जिलों में तो भू-जल स्तर दो से तीन मीटर तक गिर गया है। एक ताजा अध्ययन के अनुसार, भू-जल में इस गिरावट का मुख्य कारण झाड़ीदार वनस्पति क्षेत्रों एवं जल निकाय क्षेत्रों का तेजी से सिमटना है। आबादी में बढ़ोत्तरी और कृषि क्षेत्र में विस्तार के कारण भी भू-जल की मांग बढ़ी है। कानपुर स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) और काठमांडू स्थित इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटिग्रेटेड माउंटेन डेवेलपमेंट के शोध कताओं द्वारा उत्तरी बिहार के 16 जिलों में किए गए इस अध्ययन के अनुसार, जल निकाय सिमटने के कारण प्राकृतिक रूप से होने वाला भूमिगत जल रिचार्ज भी कम हुआ है।

कुल निष्कर्ष यह है कि आज भारत समेत पूरे विश्व में जल के लिए हाहाकार की स्थिति हो रही है। ऐसे समय में जैविक खेती ही मार्ग प्रशस्त कर सकता है। जैविक खेती में केंचुआ प्रमुख होता है। इसे यूं ही नहीं किसानों का दोस्त कहा जाता है। जैविक खेती से न सिर्फ भू-जल स्तर में बढ़ोत्तरी होती है बल्कि आर्सेनिक, फ्लोराइड सहित सभी नुकसानदेह तत्वों से भू-जल का बचाव भी होता है। यह देखा गया है कि नुकसानदेह तत्वों की मात्रा भू-जल में तभी बढती हैं, जब भू-जल का स्तर घट जाता है।

उपाय

भूमिगत जल को जैविक खेती के परिणामस्वरूप हुए भूमि सुधार से उत्पन्न जल संग्रहण के द्वारा सुधारा जा सकता है। पूरे एक हेक्टर खेत में प्राकृतिक ढंग से इसे करने के लिए भारतीय नस्ल के गौ वंश का 250 किलोग्राम गोबर तथा गो मूत्र को 3 किलो गुड़,1 किलोग्राम पीपल या बरगद के जड़ के पास की मिट्टी को मिलाकर 1 हेक्टेयर जमीन में फैला दें। इस मिश्रण से 21 दिनों में खेत के 15 फीट गहराई में बैठे मिट्टी खानेवाले केंचुए सक्रिय हो जाते हैं। ये एक दिन में 20 बार ऊपर नीचे जाते हैं। 1 हेक्टेयर खेत में 15 हजार से अधिक केंचुए रहते हैं। इस तरह से पूरा खेत सरंध्र हो जाता है। बारिश का पूरा पानी भू-गर्भ में चला जाता है और जैविक खेती के लिए भूमि तैयार हो जाती है।

भारतवर्ष में सालाना औसतन 120 सेंटीमीटर बारिश होती है। इसका 20% पानी वाष्पीकरण में नष्ट हो जाता है। एक हेक्टेयर जमीन में यानी 10,000 वर्ग मीटर .1 मीटर बारिश = 10,000 वर्ग मीटर यानी कुल 1 करोड़ लीटर पानी बरसता है। जैविक खेती से हुए भूमि सुधार से वर्षा का अधिकतर जल भू-गर्भ में चला जाएगा। अनुमान के अनुसार 3 फसल सब्जी की खेती करने में एक हेक्टर में सालाना अधिकतम 35 लाख लीटर पानी लगता है। इस तरह से 40 साल में जो भू- गर्भ का जल स्तर घट कर सामान्यतः 100-200 फीट नीचे चला गया है, वह भी 4-5 साल में 20-30 फीट तक ऊपर आ जाएगा और भू-गर्भ के जल में हानिकारक तत्वों की मात्रा स्वतः कम हो जाएगी।

जैविक खेती के लिए आज कई किस्म की खाद का उपयोग हो रहा है जैसे नाडेप,बायोगैस स्लरी, वर्मी कम्पोस्ट, हरा खाद, जैव उर्वरक (कल्चर), गोबर की खाद, नाडेप फास्फो कम्पोस्ट, पिट कम्पोस्ट (इंदौर विधि), मुर्गी का खाद इत्यादि। जैविक पद्धति द्वारा व्याधि नियंत्रण के लिए कृषक भाई :- गौ-मूत्र, नीम- पत्ती का घोल/निबोली/खली,मट्ठा, मिर्च/लहसुन,लकड़ी की राख, नीम व करंज की खली का उपयोग कर रहे हैं।

जल के साथ-साथ सभी ऋतुओं को अनुकूल रखने का वर्णन भी वेदों में मिलता है। ऋग्वेद में स्पष्टतया व्यंजित है। अर्थव्यवस्था के विस्तार में पर्यावरण का ध्यान अति आवश्यक है जो भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित जैविक खेती से ही संभव है।

जारी है...

उम्र, आयु और अवस्था में अंतर

कमलेश कमल

तीनों शब्दों में अंतर स्पष्ट हो, उससे पूर्व एक वाक्य पर विचार करें : 'वह 60 साल की अवस्था में मर गया।' क्या यह वाक्य सही है?

जी, नहीं। यह व्याकरणिक रुप से और 'शब्द-मीमांसा' की दृष्टि से गलत है। सही वाक्य होगा- 'वह 60 साल की आयु में मर गया।'

इस भूमिका के बाद आइए इन शब्दों के अर्थ पर विचार करते हैं-

सबसे पहले आयु : 'जीवन-काल' को आयु कहते हैं। इसका अर्थ हुआ- जन्म के समय से लेकर मृत्यु के समय तक के बीच के अंतराल को 'आयु' कहते हैं। इसे आप जीवन-काल समझें!

दीर्घ आयु/आयुष/आयुष्य की कामना के लिए प्राचीन काल से ही 'दीघार्यु भव!' अथवा 'आयुष्मान/आयुष्मती भव!' का आशीष दिया जाता है। स्पष्ट है कि 'आयु' पूरे जीवन काल के लिए प्रयुक्त होता है। इसीलिए एक और आशीष है - 'चिरंजीवी भव!'

अवस्था : अवस्था का शाब्दिक अर्थ हालत या दशा है। लड़कपन, जवानी, अधेड़ावस्था और बुढ़ापा इसके उदाहरण हैं। गौर करें कि 'अधेड़ावस्था' में अवस्था शब्द तो समाया हुआ ही है।

उम्र का अर्थ है : जन्म से लेकर वर्तमान तक का समय; जबकि हमने देखा कि आयु जन्म से मृत्यु तक का समय होता है। यह अरबी मूल का है और फारसी होते हुए हिंदी में प्रयुक्त होने लगा है। अगर कोई कहता है कि सोहन की उम्र 40 साल है, तो यह दर्शाता है कि सोहन की मृत्यु अभी नहीं हुई है। यहाँ अगर कहा जाए कि सोहन की आयु 40 वर्ष है, तो इसका अर्थ होगा कि वह 40 वर्ष बाद मर जाएगा।

अगर वह कहता है कि सोहन की अवस्था 40 वर्ष की है, तो इसका अर्थ है कि सोहन 40 साल से उम्र की एक ही दशा/स्थिति में है। अर्थात पिछले 40 वर्ष से सोहन या तो जवान है या बूढ़ा। उसमें कोई बदलाव नहीं आ रहा है।

अगला शब्द है वय : 'वय' शब्द संस्कृत के 'वयस' से बना है जिसका अर्थ है- उम्र अथवा अवस्था (लेकिन आयु नहीं)। 'वय' शब्द का दूसरा अर्थ यौवन भी होता है ।

संस्कृत में 'वयन' का अर्थ है 'बुनना' या 'बुनने का कार्य'।

आपके शरीर के अंदर भी मांसपेशियों का जाल, कोशिकाओं का जाल बुना हुआ है। जब यह कार्य अपने चरम पर होता है तो आप परिपक्व हो जाते हैं और उसके लिए शब्द है- 'वयस्क होना'। इस समय आपके अन्तरवयव (भीतर के अवयव) सबसे मजबूत होते हैं।

वयस्कता को परिपक्वता कहते हैं। बचपन और यौवन के बीच के काल को 'वयःसंधि' कहते हैं।

'पन' प्रत्यय लगाकर भी अवस्था का बोध होता है, जैसे- बालकपन, लड़कपन, अधेड़पन , किशोरपन, बचपन।

इस तरह हम देखते हैं की उम्र, आयु, अवस्था और वय शब्दों में भी अर्थपरक विभेद है, जिन्हें समझना चाहिए जिससे सही जगह सही शब्द का प्रयोग हो। अस्तु, शब्दों के प्रति उदासीनता के कारण प्रयोक्ता जो भी शब्द स्मरण आ जाए, उपयोग कर लेते हैं और फिर गलत पढ़ते लिखते सही प्रयोग से दूर हो जाते हैं।

जारी है...

न्यूरोथैरेपी

-सुमन सौरभ

चिकित्सा जगत में वैसे बहुत सारी पद्धतियां हैं। उस पद्धतियों में एक पौराणिक पद्धति रही है। जिसे आजकल **'पदाघात थैरेपी'** या **'न्यूरोथैरेपी'** के रूप में जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि शारीरिक चिकित्सा उपचार पूरी तरह से रोगी की स्थिति और लक्षणों पर निर्भर करता है। न्यूरोथैरेपी का मानना है कि शरीर में जो बीमारी के लक्षण दिखते हैं, वह शरीर के रचना प्रणाली में किसी कमी के कारण परिलक्षित होते हैं। शरीर अपनी चिकित्सा करने में स्वयं सक्षम होता है। सिर्फ रोग के कारण वाले अंग को उद्दीपित करके रोगी को स्वस्थ किया जा सकता है।

न्यूरोथैरेपी एक भारतीय उपचार पद्धति है। न्यूरोथैरेपी उपचार एक दिन के बच्चे से लेकर 100 वर्ष तक के उम्र के मरीजों को दिया जा सकता है। इस पद्धति में न किसी प्रकार की दवा और नहीं किसी प्रकार के उपकरण का प्रयोग किया जाता है। शरीर के अंदर ही उसे ठीक रखने के लिए हर प्रकार की रसायन बनाने की क्षमता होती है। परंतु, आहार-विहार समय पर और संतुलित ना होना, गलत तरीके से उठना-बैठना, दुषित वातावरण, मानसिक तनाव, सामर्थ्य से अधिक मानसिक या शारीरिक कार्य, पोषण की कमी, डर या क्रोध जैसे कारणों से शरीर के अंग व ग्रंथि प्रभावित होते हैं। इससे उनका कार्य बिगड़ जाता है। इन ग्रंथियों से बनने वाले रसायन या हॉर्मोंस में कमी आ जाती है। फलतः शरीर का एसिड, अल्कली इत्यादि का संतुलन बिगड़ जाता है और मनुष्य बीमार हो जाता है। लंबे समय तक व्यवस्थित और संतुलित जीवन नहीं जीने से मनुष्य अस्वस्थ हो जाता है। न्यूरोथैरेपी में शरीर के खास स्थान पर एक निश्चित समय तक दबाव डाला जाता है। इससे ये ग्रंथियां अपने कार्यों को सुचारू रूप से करने लगती है।

यदि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता किसी कारणवश कम हो और उस समय अगर कोई वायरस या बैक्टीरिया शरीर पर हमला करता है तो शरीर उसका मुकाबला नहीं कर पाता और बीमारी के वश में हो जाता है। न्यूरोथैरेपी उपचार द्वारा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा दिया जाता है, जिससे वायरस या बैक्टीरिया दोनों को खत्म करने की शक्ति शरीर में ही निर्माण होती है। इस प्रकार बिना किसी खराब असर के शरीर को स्वस्थ किया जाता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि न्यूरोथैरेपी में नाभि को केंद्र बिंदू मानकर उपचार किया जाता है।

शरीर में बीमारियां क्यों आती हैं ?

- पाचन ठीक प्रकार से न होने से।
- विटामिन ठीक से अवशोषित नहीं होने से।
- दोनों किडनी एक जैसे कार्य न करने पर एसिड-अल्कली का संतुलन बिगड़ जायेगा।
- जेनेटिक बीमारियों से।
- कोई ग्रंथि ठीक प्रकार से कार्य न करने से।
- किसी ग्रंथि में कैल्शियम ज्यादा होने से या किसी ग्रंथि को पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम ने मिलने से।
- एक मुख्य ग्रंथि का उसकाव ठीक रूप से नहीं होना।

सबसे महत्वपूर्ण ध्यान देने वाली बात यह है कि हमारे शरीर के हर कार्य के लिए हमें ऊर्जाशक्ति की आवश्यकता है, जो भोजन से प्राप्त होती है। हमारे दैनिक कार्यों के लिए जो शक्ति चाहिए अगर उससे ज्यादा शक्ति भोजन से प्राप्त हो तो हमें दिनभर उत्साह और स्फूर्ति महसूस होती है। भोजन से ऊर्जा प्राप्त करने के लिए यह अनिवार्य है कि पाचन तथा अवशोषण ठीक प्रकार से होना चाहिए।

भोजन को अन्न नालिका द्वारा मुख से मलाशय तक गुजारने में भी काफी ऊर्जा शक्ति की जरूरत पड़ती है और यह मुख्यतः उस पर निर्भर करता है कि खाने में क्या-क्या चीजें शामिल हैं? आम तौर पर लोगों का यही मानना है कि पका हुआ भोजन आसानी से पचेगा और कच्चा भोजन पचेगा ही नहीं। बल्कि सच्चाई ठीक इससे विपरीत है। सलाद, अंकुरित भोजन तथा फल इत्यादि को पचाने में तथा उनके अवशेष को मल द्वारा निकालने के लिए शरीर को काफी कम मेहनत करनी पड़ती है। तली हुई चीजें, मसालेदार खाना, पनीर, छोले एवं मैदा इत्यादि से बनी चीजों को पचाने में बहुत शक्ति खर्च होती है। इसलिए कुछ लोगों को ऐसे भोजन करने के बाद थकान महसूस होती है या नींद आ जाती है।

बीमार होने की स्थिति में लेटे रहने का मन करता है क्योंकि उस समय हृदय, श्वसन तंत्र एवं मस्तिष्क के कार्यों के लिए थोड़ी बहुत ऊर्जा की आवश्यकता रहती है। इसलिए बीमारी के समय बहुत ही हल्का भोजन दिया जाता है। वह भी भूख से कुछ कम मात्रा में रहनी चाहिए। जिससे शरीर को उसे पचाने में ज्यादा मेहनत न करना पड़े। अच्छा व उपयुक्त भोजन वह है जिसे लेने के बाद तुरंत ही व्यक्ति को स्फूर्ति और शक्ति महसूस होती है। इसका सबसे बढ़िया उदाहरण है नारियल पानी अथवा उस मौसम के फलों का ताजा रस या सब्जियों का रस इत्यादि है। खाने पीने का उचित ध्यान न देना ही शरीर में बीमारियों की जड़ है। ■■■

गोवत्स पूजन से प्रभात ग्रामों की प्रदर्शनी का शुभारम्भ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने डुंगरपुर के बेणेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पूज्य महंत स्वामी अच्यतानंद जी महाराज के साथ भेंट व चर्चा की. उनको नागपुर पधारने का निमंत्रण दिया. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने बेणेश्वर धाम स्थित श्री हरी मन्दिर में पूजन व दर्शन किया.

बेणेश्वर धाम से सीधे सरसंघचालक भेमई पहुंचे. जहां ग्रामवासियों व ग्राम विकास समिति ने उत्साह पूर्वक उनका पारंपरिक वाद्ययंत्रों के साथ सैकड़ों महिलाओं ने कलश यात्रा निकालकर उनका स्वागत, अभिनन्दन किया. महिला समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम में गौ-पूजन सरसंघचालक जी ने किया. इस अवसर पर संघ के अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख स्वांतरंजन, राजस्थान क्षेत्र प्रचारक निंबाराम, चितौड़ प्रांत प्रचारक विजयानंद उपस्थित थे.

प्रदर्शनी उद्घाटन

प्रभात ग्राम मिलन में देशभर से आए सहभागियों के लिए राजस्थान के प्रभात ग्राम के कार्यों को दशार्ने वाली एक प्रदर्शनी भी लगाई गई है. प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य वी. भागय्या एवं ग्राम विकास गतिविधि के सह संयोजक गुरूराज ने भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं गोवत्स (बछड़े) का पूजन कर किया.

प्रदर्शनी में कोटा जिले के डूंगरज्या, बांरा के रूपपुरा, बांसवाडा के राखो, राजसमंद के पीपलांत्री में हुए उल्लेखनीय परिवर्तनों को चित्रों के माध्यम से बताया गया है.

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के क्रम में समाज नायकों व सामाजिक कार्यकताओं के चित्र एवं संक्षिप्त जीवन के बारे में जानकारी दी गयी है.

इसके अतिरिक्त ग्राम विकास, शिक्षा, सामाजिक चेतना, जीवन मूल्य, स्वरोजगार, जैविक खेती, जल संरक्षण, पशु-नस्ल सुधार आदि विषयों में कार्य करने वाले अनेक संगठन के कार्यों का चित्रण भी प्रदर्शनी में सम्मिलित है. ■■■

जीवन को पूर्णता लाने का विचार भारत के पास – प पू सरसंघचालक

दुनिया के अधूरे जीवन को पूर्णता लाने का विचार भारत के पास है। सुख पाने का प्रयोग लगातार हुआ है। 2 हजार साल तक अलग अलग प्रयोग करने के बाद भी दुनिया दुःखी है। अंततः दुनिया अब समझने लगी है कि भारतीय मनीषियों ने जिस परम सुख की बात कही वही सत्य है। उक्त विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूज्य सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत ने भागलपुर के प्रसिद्ध कुप्पाघाट स्थित महर्षि मेंहीं आश्रम में सद्गुरु निवास लोकार्पण समारोह में व्यक्त किया।

अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि दुनिया में दो प्रकार के विचार हैं - मानवतावादी और अहंतावादी। मानवतावादी विचार मानती है कि जैसे सब प्राणी हैं , वैसे मैं भी हूं। मैं पूर्ण का एक हिस्सा हूं। वहीं अहंतावादी विचारधारा अपने अस्तित्व को सर्वोपरि मानती है। मेरे कारण ही पूर्णता है। दुनिया के लोग सुख के पीछे भागते हैं। बाद में यह दुःख का कारण बनता है। हमारे मनीषियों ने बताया कि सुख हमारे अंदर है। आत्म ज्ञान को जानने से कभी न समाप्त होनेवाला सुख मिलता है। लेकिन सिर्फ इससे जीवन नहीं चलता है। इसलिए लौकिक जीवन में हमें कर्म करना पड़ता है। इसे साधने का नाम ही जीवन है। इसलिए जो व्यक्ति एकांत में साधना और लोकांत में परोपकार करता है, उसका जीवन ही सफल है।

अपने बिहार प्रवास का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि 6 वर्ष तक बिहार उनका केंद्र था। लेकिन उन्हें महर्षि में आश्रम आने का सौभाग्य नहीं मिला। पहली बार वे इस आश्रम में आए हैं और यहां की व्यवस्था और अनुगुंज से अत्यंत प्रभावित हैं। इस अवसर पर पटना जंक्शन स्थित हनुमान मंदिर न्यास के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने भी अपने विचार रखे।

अपने उद्बोधन के पूर्व उन्होंने श्री सद्गुरु निवास का लोकार्पण किया। परिसर में वृक्षारोपण और गौ पूजन भी किया। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन अखिल भारतीय संतमत - सत्संग महासभा के अध्यक्ष अरुण कुमार अग्रवाल ने किया। मंच संचालन स्वामी सत्यप्रकाश और विषय प्रवेश दिव्य प्रकाश ने किया। ■■■

उच्च शिक्षा संस्थानों में तनावमुक्त रचनात्मक वातावरण निर्माण के लिए किए जाएं प्रयास

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने देश के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में अकादमिक दबाव व तनाव को कम करने की दिशा में संस्था तथा नीतिगत दोनों स्तर पर शीघ्रता से प्रयास करने की मांग की. कोरोना सहित विभिन्न कारकों ने विद्यार्थियों के बीच कई तरह की मुश्किलें उत्पन्न की हैं, जिसके कुपरिणाम कई रूपों में सामने आ रहे हैं.

अभाविप ने मांग की कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों के मध्य अकादमिक तनाव जैसी समस्याओं को दूर करने के निमित्त शैक्षणिक परिसरों में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों व गतिविधियां शुरू करने के साथ ऐसे प्रयास होने चाहिए जो छात्रों के मध्य सकारात्मकता का

प्रसार कर सकें.

2020 में तिरुचिरापल्ली में सम्पन्न विद्यार्थी परिषद की विचार बैठक में परिसरों को आनंदमय सार्थक छात्र जीवन का केन्द्र बनाने तथा विद्यार्थी के शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ सामाजिक व राष्ट्र जीवन के लिए उपयोगी बनने हेतु रचनात्मक परिवेश निर्मित करने का मत आया था. शैक्षणिक परिसरों को दबाव व तनावमुक्त कर रचनात्मक परिवेश निर्मित करने की दिशा में शीघ्रता से कार्य करने की आवश्यकता है.

महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि, ह्लबीते दिनों में जिस प्रकार से अलग-अलग उच्च शिक्षा संस्थानों में आत्महत्या की घटनाएं सामने आई हैं, वह बेहद चिंताजनक हैं. इस तरह की स्थिति सुधरे इसलिए विभिन्न सकारात्मक कदम उठाने होंगे. अकादमिक तनाव को कम करने की दिशा में सरकार तथा शिक्षा संस्थानों के प्रमुखों सहित सभी हितधारकों को एकसाथ आना होगा व शैक्षणिक परिसरों में सकारात्मक परिवर्तन और विद्यार्थियों के लिए खुला एवं रचनात्मक परिवेश निर्मित करने की दिशा में तेजी से प्रयास करने होंगे. ■■■

मनगढ़ंत समाचार प्रकाशित करने पर विभिन्न मीडिया संस्थानों के खिलाफ एफआईआर दर्ज

अयोध्या में 100 एकड़ में बनेगा आरएसएस मुख्यालय के शीर्षक से मनगढ़ंत समाचार प्रकाशित किया था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जानबूझकर मनगढ़ंत, तथ्यों के विपरीत समाचार (अयोध्या में 100 एकड़ में बनेगा आरएसएस मुख्यालय) प्रकाशित करने के मामले में विभिन्न मीडिया संस्थानों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई है। अवध प्रांत प्रचार प्रमुख अशोक दुबे ने दैनिक भास्कर सहित अन्य मीडिया संस्थानों के खिलाफ आईटी एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत लखनऊ के हजरतगंज थाना में शिकायत दर्ज करवाई है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर आईपीसी की धारा 153 ए, 505, व आईटी एक्ट की धारा 66 के तहत एफआईआर दर्ज की है।

डॉ. अशोक दुबे ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि 14 फरवरी को दैनिक भास्कर ने अपनी वेबसाइट पर 'अयोध्या में 100 एकड़ में बनेगा आरएसएस मुख्यालय' शीर्षक से समाचार प्रकाशित किया था। इसी दिन न्यूज 24 चैनल ने भी उक्त समाचार चलाया। इस मनगढ़ंत समाचार का खंडन करते हुए शिकायतकर्ता ने त्वरित ही सभी को प्रेषित किया। दैनिक भास्कर के स्थानीय प्रतिनिधि के साथ-साथ विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों से भी बात की। दैनिक भास्कर के प्रतिनिधि की ओर से आश्वस्त भी किया गया था, लेकिन इसके बावजूद दैनिक भास्कर ने 15 फरवरी के अपने प्रिंट एडिशन में पुनः समाचार प्रकाशित किया।

दैनिक भास्कर व न्यूज 24 द्वारा प्रकाशित समाचार के आधार पर अन्य संस्थानों (हरिभूमि न्यूज, टीवी9, पंजाब केसरी, फोकस 24 न्यूज, ऑपइंडिया, जनादेश टुडे भारत न्यूज व अन्य) ने भी यह तथ्यहीन समाचार प्रकाशित व प्रसारित किया। मनगढ़ंत समाचार के कारण पाठकों, स्वयंसेवक व सामान्य जन में संघ की विपरीत छवि प्रस्तुत हुई। प्रतीत होता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की छवि को धूमिल करने व गलत छवि निर्माण करने के उद्देश्य से ही यह मनगढ़ंत समाचार प्रकाशित व प्रसारित किया गया। जबकि मीडिया का दायित्व बनता है कि पूर्ण रूप से जांचने के पश्चात ही समाज के समक्ष तथ्यों को रखा जाए। शिकायत के साथ ही न्यूज क्लिप्स भी पुलिस को सौंपे हैं। ■■■

वीरांगना तारा रानी श्रीवास्तव के मंचन से प्रारंभ हुई नाट्य श्रृंखला

बिहार के विस्मृत स्वतंत्रता सेनानियों पर सामाजिक संस्था संधान नाट्य श्रृंखला आयोजित कर रही है। 2 मार्च को पटना के कालिदास रंगालय में नाटक तारा रानी श्रीवास्तव के मंचन के साथ इस श्रृंखला का प्रारंभ हुआ। प्रख्यात नेत्र विशेषज्ञ डॉ सुनील सिंह परमार ने इसका विधिवत उद्घाटन किया।

आज की पीढ़ी के लोग नहीं जानते कि काकोरी रेल कांड में चेन खींचनेवाले श्यामाचरण भरथुहार औरंगाबाद के रहनेवाले थे। मोकामा स्टेशन पर ही प्रफुल्लचंद चाकी ने आत्मोत्सर्ग किया था। अंग्रेजों के खिलाफ सबसे पहला संघर्ष सारण प्रमंडल के फतेह बहादुर शाही ने ही किया था। ऐसे कई नाम हैं जिनसे लोग भूल चुके हैं। ऐसे स्वनामधन्य स्वतंत्रता सेनानियों के व्यक्तित्व और कृतित्व को जन-जन तक पहुंचाने के लिए संस्था सभी प्रयास करेगी। नाट्य विधा से लोगों का ज्यादा लगाव रहता है। इसलिए इसका प्रारंभ नाट्य श्रृंखला से किया जा रहा है। यह जानकारी नाट्य श्रृंखला के संयोजक रीतेश परमार और निर्देशक संजय सिन्हा ने दी।

कथा सार (नाटक- तारा रानी श्रीवास्तव)- वीरांगना तारा रानी श्रीवास्तव सिवान की रहनेवाली थी। 1934 में इनकी शादी फुलेना प्रसाद श्रीवास्तव से हुई। शादी की पहली रात ही इन दोगों ने प्रण किया था कि स्वाधीन भारत में ही अपने बच्चे को जन्म देंगे। जब तक देश आजाद नहीं होगा तब तक कुंवारी ही रहेंगी। और आजादी मिलने तक विश्राम भी नहीं करेंगी। 16 अगस्त, 1942 को महाराजगंज (सिवान) थाने पर तिरंगा फहराने के लिए अपने पति फुलेना प्रसाद के नेतृत्व में क्रांतिकारी युवाओं के साथ आगे बढ़ रही थी। इस जुलूस में उनकी माँ और दादा भी शामिल थे। दादा को छाती पर बंदूक के कुन्दे से वार किया गया। मां पर भी लाठी पड़ी, उनके दाहिने हाथ में गोली लगी। कसरती पहलवान पति का पहले लाठी से हाथ तोड़ा गया फिर भाला मारा गया। इसके बाद एक-एक करके 8 गोलियां दागी गयी। 8वीं गोली के बाद फुलेना बाबु शहीद हुए।

पुलिस की मार से तारा रानी स्वयं भी घायल हो गई थीं। होश आने पर उन्हें पता चला कि उनके पति शहीद हो चुके हैं। फिर भी वह विचलित नहीं हुई और थाने पर झंडा फहरा ही दिया। उस रात अपने पति के शव के साथ रही। 16 अगस्त को इन्होंने न सिर्फ अपने पति बल्कि मां और दादा जी को भी खोया। पिता जी तो पहले ही बलिदान दे चुके थे। गिरफ्तारी के समय भी वे घायल थीं। छपरा और भागलपुर जेल में रहीं। स्वराज्य मिलने के बाद ही जेल से रिहा हुई।

मदरसे की जमीन पर निकल रहे है शिवलिंग

बिहार के लखीसराय जिले के सूर्यगढ़ा थाना क्षेत्र में मदरसे की जमीन पर शिवलिंग के होने से मामला गर्मा गया। खुद डीएम और एसपी मौके पर पहुंचे और मामले की जांच शुरू कर दी है। हालांकि पुलिस- प्रशासन और बुद्धिजीवियों के हस्तक्षेप के बाद लोगों ने शिवलिंग को किऊल नदी में प्रवाहित कर दिया है। गांव में तनाव की आशंका के मद्देनजर पर्याप्त पुलिस बल और मजिस्ट्रेट की तैनाती कर दी गई है।

जानकारी के मुताबिक सूर्यपुरा पुरानी बाजार वार्ड संख्या 16 के एक गैरमजरूआ जमीन पर पेड़ कटाई का कार्य चल रहा था। कटाई के क्रम में पेड़ के बगल में थोड़ी ही गहराई पर शिवलिंग प्रकट होने की अफवाह जिले भर में फैल गई। जैसे-जैसे लोगों को इसकी जानकारी होती गई, लोगों की भीड़ जुटनी शुरू हो गई। प्रशासन और पुलिस के अधिकारियों ने सतर्कता बरतते हुए मौके पर पहुंचकर जांच- पड़ताल की जांच में पाया गया कि माहौल बिगाड़ने को लेकर नया शिवलिंग उक्त स्थान पर रखने का कार्य किया गया। उक्त स्थान से कुछ ही दूरी पर किऊल नदी प्रवाहित होती है, जहां शांति समिति के सदस्यों के निर्णय के बाद उक्त शिवलिंग को विसर्जित कर दिया गया।

डीएम अमरेंद्र कुमार और एसपी पंकज कुमार के अलावा एसडीपीओ संजय कुमार, एएसपी रौशन कुमार सीजी सुमित कुमार आनंद, अंचल पुलिस इंसपेक्टर विजय शंकर, थानाध्यक्ष राजीव कुमार के अलावा मेदनीचैकी, लखीसराय और अन्य स्थानों के थाना प्रभारी की भी यहां मौजूदगी दिखी। इसके अलावा क्षेत्र के जनप्रतिनिधि और बुद्धिजीवियों ने भी तत्परता दिखाते हुए लोगों को समझाने बुझाने के साथ-साथ माहौल को शांत रखने में अपनी सहभागिता निभाई।

शांति समिति के सदस्यों ने की पहल

गांव के मो आलम के द्वारा जमीन पर मौजूद पेड़ों की कटाई के लिए किसी दूसरे व्यक्ति को बेच दिया था। पेड़ की कटाई चल रही थी और एक पेड़ कट भी गया दूसरा पेड़ काटने गए तो इसी दौरान जमीन के कुछ अंदर शिव लिंग व छोटा पुराना बसहा की मूर्ति मिली। अधिकारियों और शांति समिति के सदस्य इस बात पर सहमत हुए कि असामाजिक तत्वों ने माहौल बिगाड़ने की दृष्टि से सीमेंट की बनी शिवलिंग की रख दिया था। एक-दो लोगों ने शिवलिंग में फूल माला भी डाल दी। डीएम ने कहा कि गैरमजरूआ जमीन की मापी का कार्य होली के बाद होगा। ग्रामीणों के अनुसार यह जमीन लखीसराय में रहने वाले हाजी मार्केट के पूर्वज के अधिकार में है, लेकिन केवाला कागज किसी के पास नहीं है।

डीएम अमरेंद्र कुमार ने कहा कि एहतियातन फोर्स की तैनाती मजिस्ट्रेट के साथ कर दी गई है। दोनों पक्षों के लोगों से बात चल रही है। शांति बहाली करना प्रशासन की पहली प्राथमिकता है। पूरे प्रकरण पर जिला प्रशासन नजर रख रहा है।

महेंदर मिसिर : पूरबिया उस्ताद

उनके प्रेम गीतों में महज रोमांस नही रहता, स्त्री का देह नहीं होता बल्कि सदियों से स्त्री की दबी इच्छा-आकांक्षा का स्वर होता है। अपने को पूरा-पूरा पा लेने का स्वर, यही बात उनमें सबसे खास लगती है। वह स्त्री प्रधान रचनाकार थे।

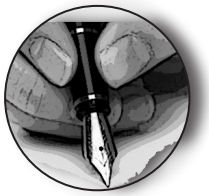

चंदन तिवारी

महेंदर मिसिर पुरबी इलाके के अद्भुत और अपने तरीके के अनोखे रचनाकार थे। उनके एकाध गीतों को करीब दस-बारह सालों से छिटपुट गाती रही थी। जब पुरबिया तान सीरीज की शुरूआत की, तो उनके ही गीतों से की। अब तक मैनें करीब 16 अलग-अलग गीत गाये हैं, जैसे-जैसे एक-एक कर उनके गीत गाती रही, उनके गीतों में और उनके व्यक्तित्व में रूचि और बढ़ती गयी।

रामनाथ पांडेय ने उनपर पहला उपन्यास लिखा था 'महेंदर मिसिर' और पांडेय कपिल के कालजयी उपन्यास 'फुलसुंधी', इन दोनों को पढ़ा। जौहर सफियावादी ने भोजपुरी में उनकी जीवनी लिखी है- 'पुरबी के धाह', उसे देखी। इसी तरह कई जगहों सें जानकारी जुटाती रही। एक-एक कर उनके गीत भी मिलते गये। उनके गीतों को उलट-पुलट कर देखती हूँ, तो चकित रहती हूँ कि जितने बड़े फलक पर वे अपने समय में गीतों को रच रहे थे, उस समय में या उसके बाद भी उस तरह का रचनाकार कोई नहीं ही हुआ होगा।

वे अपनी रचनाओं में प्रेम को जितने बड़े स्तर पर रखते है या स्त्रियों की प्रेम की आजादी के लिए जितनी रचनाएँ करते हैं, वह चकित करनेवाला है। चाहे व सीधे-सहज पति-पत्नी के प्रेम के गीतों के जरिये, प्रेमी-प्रेमिका के गीतों के जरिये हो, राधा-कृष्ण के गीतों के जरिये हो या फिर रावण-मंदोदरी के ही प्रेम का गीत क्यों न हो। वे छपरा के एक गांव मिसरवलिया में पैदा हुए एक ऐसे रचनाकार थे, जिन्हें पुरबिया उस्ताद कहा जाता है लेकिन जिनके दिवाने दुनिया के कोने-कोने में फैले हुए हैं, इसका एहसास विगत माह तब हुआ, जब मुझे नीदरलैंड में बुलाया गया। नीदरलैंड का आमंत्रण विशेष तौर पर महेंदर मिसिर के लिखे राधा-कृष्ण के प्रेमगीत को गाने के लिए था। इस शानदार गीत में भगवान कृष्ण एक स्त्री का रूप बनाकर, गोदनहरी बनकर राधा से मिलने पहुंचते है।

महेंदर मिसिर के गीतों में प्रेम अपने उच्चत्तम स्तर पर मिलता है। वे अपूर्व रामायण में मंदोदरी का एक प्रसंग लाते हैं, जब रावण मार दिया जाता है, तो मंदोदरी विलाप करती है। उसमें भी प्रेम अपने उच्चतम रूप में दिखता है। जब वे बारहमासा रचते है, तो उसकी पंक्तियों से गुजरते हुए अविश्वसनीय लगता है कि कोई पुरूष एक स्त्री के मन की इच्छा-आकांक्षा को इतने सूक्ष्मतम स्तर पर जाकर कैसे अभिव्यक्त कर सकता है।

महेन्दर मिसिर जब निरगुण रचते है, तो वे प्रेम को महत्व देते है। लिखते है-सखी हो प्रेम नगरिया हमरो छूटल जात बा....लेकिन, उनके प्रेम गीतों में महज रोमांस नही रहता, स्त्री का देह नहीं होता बल्कि सदियों से स्त्री की दबी इच्छा-आकांक्षा का स्वर होता है। अपने को पूरा-पूरा पा लेने का स्वर, यही बात उनमें सबसे खास लगती है। वह स्त्री प्रधान रचनाकार थे । स्त्री मन के प्रेम-विरह को राग देनेवाले। सोचती हूँ कि कितना कठिन रहा होगा उनके लिए! किस तरह वे स्त्री मन के अंदर की बातों को एकदम सटीक शब्दों में उतारते होंगे। कितनी गहराई में डूब जाते होंगे। वे स्त्री ही तो बन जाते होंगे। लिखते समय.....।

(लेखिका प्रसिद्ध लोक गायिका हैं)

साभार : दैनिक हिन्दुस्तान

RNI No.- BIHHIN/2003/12538 Postal Reg: R-10/NP-39/Patna GPO/23-25

महत्वपूर्ण तिथियां

अप्रैल

04 अप्रैल, महावीर जयंती

14 अप्रैल, सतुआनी/अंबेडकर जयंती

28 अप्रैल, महर्षि मेंही जयंती

29 अप्रैल, जानकी नवमी, उत्सव

मई

01 मई, प्रफुल्लचंद चाकी, पुण्यतिथि

01 मई, श्रमिक दिवस

05 मई, बुद्ध जयंती

09 मई, मातृ दिवस

10 मई, 1857 की क्रांति

19 मई, वट सावित्री व्रत

30 मई, गंगा दशहरा

जून

21 जून, योग दिवस

29 जून, देवकी नंदन खत्री, जयंती

30 जून, नागार्जुन जयंती

30 जून, पर्यावरण दिवस

डाक टिकट

पता,

पता- विश्व संवाद केन्द्र, 104-105, सूर्या अपार्टमेंट, 10 वां तल, फ्रेजर रोड, पटना-01